बच्चे दुनिया को अलग नज़र से देखते हैं

हाल के एक अध्ययन से पता चलता है कि बच्चों को दुनिया को पूर्ण वयस्क नज़रों से देखने में काफी समय लगता है। वे यह नज़र 13 वर्ष की उम्र तक ही विकसित कर पाते हैं।

जैसे यदि यह फैसला करना हो कि कोई चित्र उभरा हुआ है या धंसा हुआ है, तो वयस्क मस्तिष्क मानकर चलता है कि रोशनी हमेशा ऊपर से आती है। यानी वयस्क किसी चीज़ की बनावट के बारे में निर्णय यह मानकर करते हैं कि उस पर जो रोशनी पड़ रही है वह ऊपर से आ रही है, जब तक कि ऐसा न मानने का कोई ठोस कारण हो। बच्चों को यह सीखने में वक्त लगता है।

शेफील्ड़ विश्वविद्यालय के जिम स्टोन जानना चाहते थे कि यह समझ कब विकसित होती है। उन्होंने 4 से 10 वर्ष उम्र के 171 बच्चों को कुछ एम्बोस्ड़ चित्र दिखाए - जैसे पैरों के निशानों के चित्र। हर बच्चे को 10 चित्र दिखाए गए थे और उन्हें यह बताना था कि चित्र उभरा हुआ है या धंसा हुआ है। 'सही' उत्तर के लिए माना गया था कि रोशनी ऊपर से पड़ रही है।

बच्चों के उत्तर उम्र बढ़ने के साथ बेहतर होते गए। कुल स्कोर 10 था और हर वर्ष स्कोर में 0.43 की वृद्धि हुई। यदि हर उम्र के बच्चों के नज़रिए के विकास की यह दर रहे, तो स्टोन के मुताबिक बच्चों को 21 माह की उम्र में यह समझ जाना चाहिए कि रोशनी ऊपर से आती है। मगर यह एहसास पूरी तरह 13 वर्ष की उम्र में ही विकसित हो पाएगा।

इस अध्ययन का कुल जमा निष्कर्ष यह है कि बच्चे वास्तव में दुनिया को अलग नज़र से देखते हैं, और उनके एहसासों में काफी विविधता होती है। ***(स्रोत फीचर्स)***